प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिए में नहीं लिखें

1 b

प्रारूप लेखन

प्रारूप लेखन - किसी पत्र को लिखे जाने से पूर्व उसका कच्चा मसौदा तैयार करने की प्रक्रिया है।

प्रारूप का निर्माण निम्न श्रेणी लिपिक द्वारा किया जाता है जिस पर किसी उच्चाधिकारी के हस्ताक्षर होते हैं।

महत्व :- (i) पत्र में त्रुटि होने की संभावना कम।
(ii) संशोधनकर्ता का पता चल जाता है।
(iii) त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित होती है।
(iv) कोई भ्रम की स्थिति निर्मित नहीं होती।

1 (c)

संज्ञा के प्रकार

- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- जातिवाचक संज्ञा
- भाववाचक संज्ञा

धातु वाचक इत्यादि

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा
↳ व्यक्ति / वस्तु / स्थान के नाम को प्रदर्शित करता है।

उदाहरण - ताजमहल, राममनोहर लोहिया

(b) जातिवाचक —[धातुवाचक संज्ञा / समूहवाचक संज्ञा]
↳ किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान की जाति या वर्ग का बोध कराता है।

उदाहरण → कुत्ता, शेर, मानव, महल

धातु वाचक => किसी पदार्थ के नाम को प्रदर्शित
उदाहरण सोना, चाँदी

(c) भाववाचक संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु स्थान के भाव/गुण को प्रदर्शित करता है।

उदाहरण → काला, गोरा, लम्बा

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

प्रश्न

d

पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत बोलियाँ

(अ) ब्रज भाषा

(ब) राजस्थानी

(स) खड़ी बोली

(द) बुन्देली

e

मुहावरा	लोकोक्ति
(a) ये वाक्यांश होते हैं और एक ही वाक्य मे प्रयोग किए जा सकते हैं।	(a) ये पूर्ण वाक्य हैं इनकी अभिव्यक्ति 2 या अधिक वाक्यों मे ही संभव है।
(b) ये वर्ग आधारित होते हैं	(b) ये किसी पूर्व घटना पर आधारित होते हैं।
(c) इन्हे परिवर्तित नहीं कर सकते हैं।	(c) ये परिवर्तित नहीं किए जा सकते।
(d) उदाहरण- अंधों मे काने राजा	(d) आँख के अंधे नाम नयन सुख।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

f

संसदीय राजभाषा समिति (1957) के अध्यक्ष → गोविन्द वल्लभ पंत सागर जी पे।

3

g

बहुव्रीहि समास में न तो पूर्व पद न ही उत्तर पद बल्कि अन्य पद प्रधान होता है। उदाहरण

लम्बोदर → लम्बा है उदर जिनका अर्थात गणेश।

2

~~कर्मधारय~~

वहीं कर्मधारय समास में पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है।

उदाहरण

नील कमल → नीला है जो कमल

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

h

अनुच्छेद 344 →

(a) राजभाषा आयोग → नियुक्ति राष्ट्रपति
कार्यकाल - 5 वर्ष
प्रथम - आयोग - 1955
अध्यक्ष बी. जी. खेर

(b) राजभाषा समिति
स्थापना - 1957 → अध्यक्ष → गोविंद वल्लभ
कार्यकाल - 10 वर्ष पंत सागर

i

प्रविशेषण
ये विशेषण से पूर्व आते हैं।

बहुत काला सर्प — विशेष्य

प्रविशेषण विशेषण विशेष्य

...मंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक

J

तत्सम	तद्भव
(ऐसे शब्द जो संस्कृत से उत्पन्न है और यथावत हिन्दी में प्रयोग किए जाते है)	(ऐसे शब्द जो संस्कृत से ही उत्पन्न हुए है किंतु समय के साथ उनमें परिवर्तन हुआ है)

	तत्सम	तद्भव
(a)	ऋण	रिन
(b)	पितृ	पितर
(c)	परिणाम	परिनाम

K

संयुक्त व्यंजन

दो व्यंजन से मिल कर संयुक्त

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

2

देवनागरी लिपि, विशेषता

(I) बाएं से दाएं लिखी जाती है। (II) प्रत्येक ध्वनि हेतु एक निश्चित शब्द। (III)

(III) जैसा बोला जाता है वैसी लिखी जाती है।

हिन्दी, कश्मीरी, नेपाली, संथाली, मैथिली ये सब देवनागरी में लिखी जाती है।

3

लाघव चिन्ह :- ये किसी शब्द को सूक्ष्म करने हेतु प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण→ भारतीय प्रशासनिक सेवा (भा.प्र.से.)

योजक चिन्ह (–)

दो वाक्यों में संबंध दर्शाने हेतु प्रयुक्त

उदाहरण

माता-पिता, पाप-पुण्य

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

उद्धरण चिन्ह (' ' " ")

एकाकी उद्धरण चिन्ह किसी नाम उपनाम शीर्षक हेतु प्रयुक्त।

उदाहरण

'शिवमंगल सिंह सुमन'
'रामचरित मानस'

द्वि उद्धरण चिन्ह का किसी द्वारा कहे गए वाक्य / नारे को यथावत लिखने पर उपयोग करते हैं।

उदाहरण-

शास्त्री जी ने कहा "जय जवान जय किसान"

3

प्रतिवेदन

किसी घटना या आयोजन से संबंधित सूचना की जाँच पड़ताल, सूक्ष्म परीक्षण द्वारा एकत्रित कर, तथ्यों निष्कर्षों एवं सुझावों समेत किसी संस्था या व्यक्ति को सौंपना प्रतिवेदन कहलाता है।

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

लिपि

लिपि, किसी भाषा की लेखात्मक अभिव्यक्ति है। अर्थात प्रत्येक भाषा को लिखने हेतु विशिष्ठ लिपि की आवश्यकता होती है।

आर्य समूह की लिपि

(क) देवनागरी- हिन्दी में प्रयुक्त
(ख) गुरुमुखी - पंजाबी में

आर्य समूह भाषाए –
- मैथिली
- संस्कृत
- डोगरी

राजभाषा

किसी राष्ट्र की कार्य काज की भाषा जिसे संवैधानिक मान्यता प्राप्त होती है।

इसका एक विशेष व्याकरण होता है एवं यह सर्वमान्य होती है।

उदाहरण : हिन्दी को अनु० 343 राजभाषा की मान्य[ता]

देता है

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

2

हिन्दी भाषा विकास क्रम

संस्कृत (1500 बी.सी.- 1000 बी.सी)

↓

पाली (1000 - 500 बी.सी)

↓

प्राकृत (500 - 1 ईसवी) ईसा

↓

अपभ्रंश (1 - 500 ई.)

↓

वर्तमान हिन्दी (500 ई. अब तक)

4

राजभाषा अधि० के भाग-'क' के क्षेत्र

(i) उत्तरप्रदेश

(ii) मध्यप्रदेश

(iii) राजस्थान

(iv) बिहार

(v) छत्तीसगढ़

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

2

मानक भाषा

वह भाषा जो सर्वमान्य और सर्वग्राह्य हो। इसका साहित्य में पर्याप्त प्रभाव हो, मानक भाषा कहलाती है।

4

संक्षेपण

किसी प्रस्तुत गद्यांश की मूल-भाव समेत उसके एक तिहाई में व्याख्या करना, संक्षेपण कहलाता है।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

Due to political and economical power, caste limits are increased and decreased also.

Those cast who attain political powers also considered as great and as long as depressed classes achived econimical power they become merchant cast class.

These economical and political factors improving social limits of cast much than religion factor.

It seem that this is the way to for welfare of depressed classes (political and economical empowerment)

because as a son of god this claim already accepted but not properly profitable.

11

3

मुख्य परीक्षा
म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक	

वर्तमान समय में हमारे देश में अनेक बुराईयां उभर रही है।

भ्रष्टाचार, घूसखोरी, कदाचार सर्वत्र व्याप्त है चाहे वह सामान्य व्यक्ति हो या उत्तरदायी प्रशासक।

इन बुराईयों का अंत करना आवश्यक है।

किन्तु हमें हमारे छात्रों से नवयुवकों से शांतिपूर्ण तरीके से न कि विनाशकारी तरीके से समाधान का आग्रह करना चाहिए।

तथ्य यह है कि जितना संभव हो छात्र को अपनी अध्ययन को छोड़ कर इस गंदी राजनीति में शामिल नहीं होना चाहिए।

अध्ययन एवं ज्ञान एक मानव के सर्वाधिक महत्वपूर्ण संपत्ति है।
इसका त्याग करने से उन्हें रोकों के अलावा कुछ प्राप्त न होगा।

नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

तत्पश्चात यदि हमारे छात्रों एवं नवयुवकों में सुधार की कामना होगी तो हम उनके स्वागत हेतु सहर्ष व गर्व से तैयार है।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

संक्षेपण

शीर्षक - 'रामचरित मानस'

संक्षेपण

रामचरित मानस के उत्तर कांड में गरुड़ व काकभुसुंडी संवाद में गरुड़ का प्रश्न था कि सर्वश्रेष्ठ सुख व सबसे बड़ा दुःख क्या है? जिसका उत्तर काकभुसुंडी के अनुसार "निर्धनता सबसे बड़ा दुःख व संतमिलन सबसे बड़ा सुख है।"

15

भाव पल्लवन

(वो बड़ा दुःख कवन, कवन सुख भारी।

पल्लवन →

सबसे बड़ा दुःख कब होता है एवं सर्वाधिक सुख की प्राप्ति कब होती है।

उपर्युक्त गद्यांश के अनुसार यह संवाद रामचरित मानस का है जिसमें गरुड़ व काकभुसुंडी का सुख और दुःख के संदर्भ में प्रश्नोत्तर वर्णित है।

दुःख और सुख दो मानव जीवन के अभिन्न अंग है। दोनों कभी स्थायी नहीं रहते इनका समयानुसार चक्र चलता है

जहाँ दुख : विरह, पीड़ा, कष्ट से उत्पन्न होता है वहीं सुख हर्ष, उल्लास, संतोष से प्राप्त होता है।

दुःख के अनेक कारक होते है और यह भी संभव कि सबके लिए दुःख के मायने अलग हो और उनकी तीव्रता भी भिन्न हो यही हम सुख के संदर्भ में भी कह सकते है।

किसी के लिए दरिद्रता तो किसी के लिए विरह तो किसी के लिए शारिरिक कष्ट सर्वाधिक दुःखदायी हो वहीं किसी के लिए धन तो किसी के लिए सम्मान तो किसी के लिए सत्संग ज्यादा सुखदायी हो।

कौन सा सुख व दुःख ज्यादा बड़ा है वह व्यक्ति की मनोवृत्ति निर्धारित करती है।

मुख्य परीक्षा
म.प्र. लोक सेवा आयोग

प्रश्न क्रमांक

(ii) दरिद्रय के समान दुःख नहीं, संत मिलाप समान सुख नहीं।

भावपल्लवन

इस वाक्य मे यह स्पष्ट है कि निर्धनता को सबसे बड़ा दुःख और संत मिलाप सबसे बड़ा सुख है।

क्योंकि वर्तमान समय मे भी निर्धनता एक जाल का निर्माण करती है जैसे यदि कोई व्यक्ति निर्धन है तो न तो वह बेहतर जीवनस्तर बल्कि सामाजिक स्वास्थ्य, शैक्षणिक स्तर से वंचित होता हुआ, दुःख का भागी होता है।

वहीं संत मिलाप को सुःख कहा गया क्योंकि हमारे भारतीय संस्कृति मे भौतिकतावाद, निजीवाद को महत्व नहीं बल्कि आध्यात्म, धर्म, पुण्य को महत्व प्राप्त होता है।

हम इसी मौलिक विचारधारा वाले परिवेश मे बड़े हुए है जिसे ध्यान

जिसे धन परम संतुष्टि नहीं दे सकता।

यही

संत, आध्यात्म व सद्मार्ग के मार्गदर्शक होते हैं, अतः हमें जिन वास्तविक लक्ष्य की मनोकामना होती है वो इन सद्मार्गी सन्तो से ही पूर्ण हो सकती है।

अतः यही कारण कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने संतमिलाप को ही सबसे बड़ा सुख बताया क्योंकि हमारे संस्कृति मे धन नहीं शांति व मोक्ष ही परम लक्ष्य है।

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

5

Agent → अभिकर्ता

Civil disobedience - सविनय अवज्ञा

Capital - राजधानी / पूँजी

Nationalisation - राष्ट्रीयकरण

Valid - वैध

6

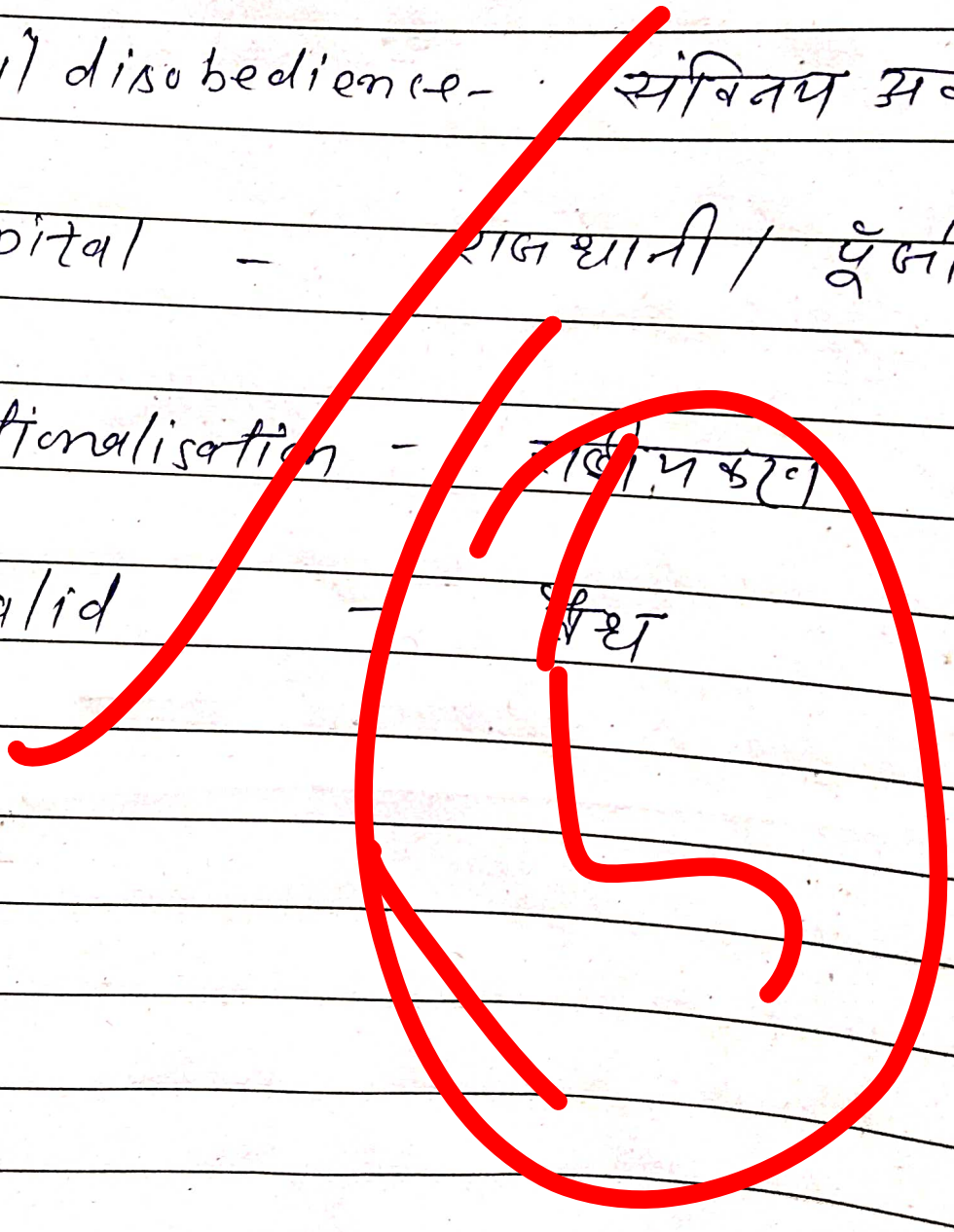

~~कार्यालय~~

6

जिला कलेक्टर
इन्दौर

क्रमांक जि.क./28-11-2020/001 इन्दौर 28/11/2020

कार्यालय आदेश

यह आदेश दिया जाता है कि, सरकार के निर्देशानुसार कोविड-19 की परिस्थितियों के चलते सम्पूर्ण बाजार सुबह 8 बजे से 2 बजे तक खुले रह सकेंगे। इस दौरान संलग्न सूची में निहित आपातकालीन सुविधाएं निर्बाध रूप से जारी रहेंगी।

हस्ताक्षर
जिला कलेक्टर
इन्दौर

संलग्न सूची
(i) एम्बुलेंस
(ii) चिकित्सागृह
(iii) पुलिस कार्यालय

गुरुपूर्णा आई.सी.एस. 2nd माला, संदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर

प्रश्न क्रमांक

7

(ट) घी के दिए जलाना

अर्थ → अत्यन्त खुशी मनाना।

वाक्य प्रयोग - कोविड-19 की वैक्सीन प्राप्त करने पर समस्त विश्व घी के दिए प्रज्ज्वलित करेगा।

(ठ) हाथ कंगन को आरसी क्या ?

अर्थ- प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं।

प्रयोग → पाकिस्तानी एजेंटों के पाकिस्तानी पासपोर्ट समेत पकड़े जाने पर पुलिस अधिकारी ने कहा, हाथ कंगन को आरसी क्या।

(ड) ईंट से ईंट बजाना

अर्थ- बराबर रूप से हानि पहुंचाना।

प्रयोग- गालवन घाटी में भारतीय सेना ने चीनियों की ईंट से ईंट बजा दी

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

नीचे हाशिए में नहीं लिखें

(10) अक्ल का चरने जाना।

अर्थ- बुद्धि भ्रष्ट होना।

प्रयोग- देश बेरोजगारी और महामारी के संकट से जूझ रहा है और नेताजी का ध्यान वोट बैंक की राजनीति पर है लगता है नेताजी की अक्ल घास चरने गई है।

3

(1) मेढकी को जुकाम होना

अर्थ- साधारण व्यक्ति का अकड़ दिखाना

प्रयोग- ~~स्वायत्तमेत~~

वह महीने भर में दो हजार कमाता है और ख्वाहिशें लाखों की करता है इसे कहते हैं मेढकी

(1) मेढकी को जुकाम होना

अर्थ- साधारण व्यक्ति का अकड़ दिखाना

प्रयोग- कुसुम घर में बर्तन धोती है किन्तु वाक शैली एलन्त कहु है। इसे कहते है

मेढकी को जुकाम होना

प्रश्न क्रमांक

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

8

(3) वस्त्र - चीवर, कपड़ा, कर्पट

(5) कमल - जलज, अरविन्द, सरोज, पद्म

(6) उत्कर्ष - अपकर्ष

(7) सामिष - निरामिष

(8) सपूत - कुपूत

2

3

1/2

1

1/2

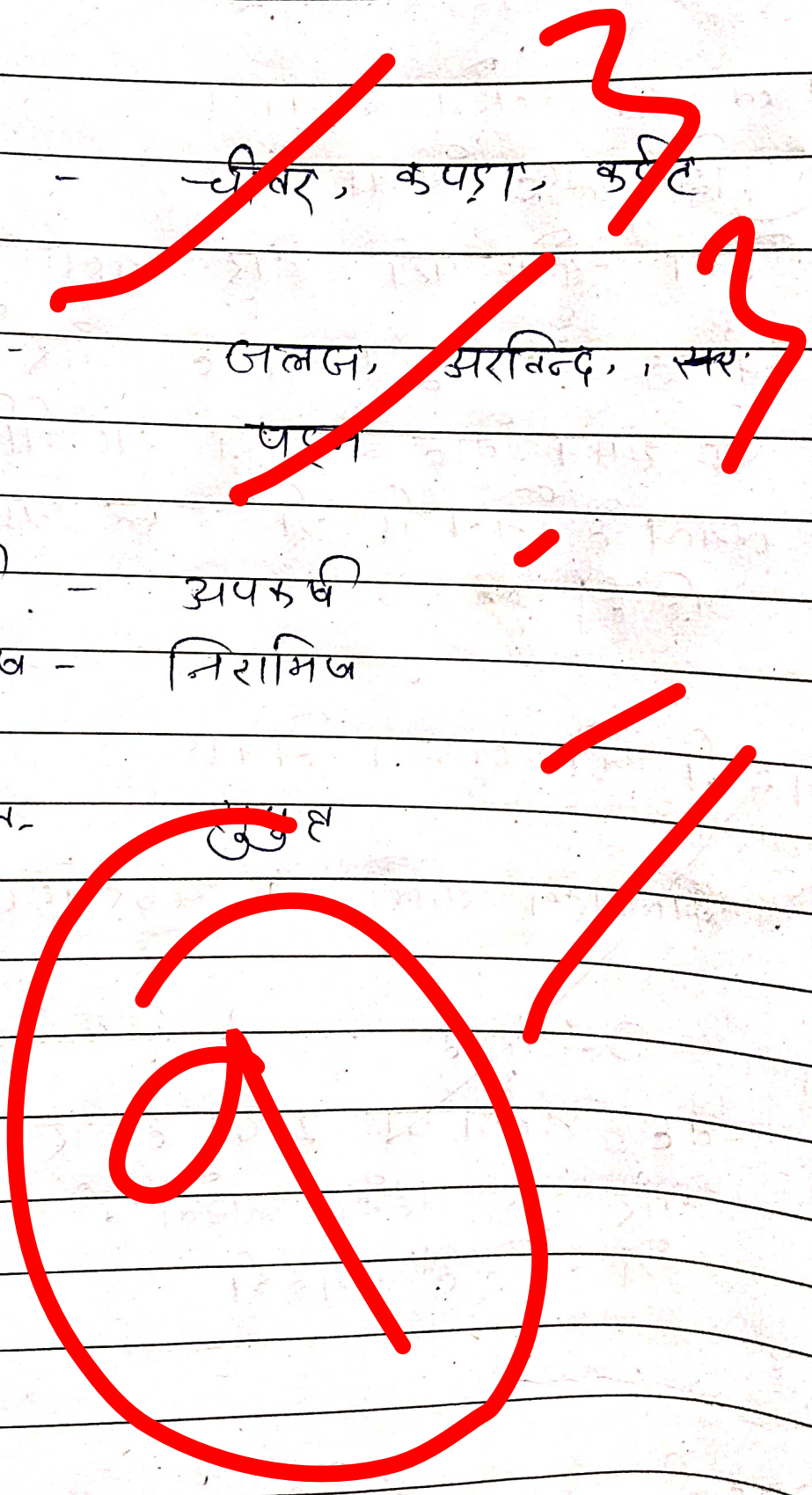

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

7 (i) शीर्षक- मुद्रास्फिति

(ii) मुद्रा तभी लाभकारी है जब उसके बदले वस्तु एवं सेवाएं प्राप्त हो सके।

(iii) मुद्रास्फिति " वस्तु एवं सेवाओं के मूल्य में ऐसी वृद्धि जिसमें उनका कुल मूल्य स्तर बढ़ जाता है।

(iv) मुद्रा ~~मूल्य~~ स्फिति में वृद्धि -

(a) आयात बढ़े

(b) विदेशी आय ज्यादा प्राप्त हो

(c) सरकारी अमानिको द्वारा प्रेषित धन बढ़ा

(d) बैंकों द्वारा उधार देने से

(e) सरकारी व्यय बढ़ते है

(v) मुद्रास्फिति असंतुलन का कारण

(a) मुद्रा आपूर्ति बढ़ना

(b) उत्पादन कम या स्थिर रहना

(c) मशीन, पूंजी विद्युत, मानव संसाधन

(d) की कमी

(a) माँग > आपूर्ति

10

अनुस्मारक

पूर्व भेजे गए पत्र का जब निर्धारित समयावधि में जवाब न मिले या कार्यवाही न हो तो अनुस्मारक भेजे जाते है।

पहला अनुस्मारक 30 दिन में
दूसरा 15 दिन
तीसरा 7 दिन मे

विशेषता

(1) औपचारिक पत्र होता है।

(2) अन्य पुरुष का प्रयोग होता है।

(3) पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है।

(4) पूर्व भेजे पत्र का क्रमांक व तिथि वर्णित होती है।

(5) धन्यवाद आदि शब्द प्रयुक्त नहीं।

(6) प्रिय, आपका ऐसे शब्द प्रयोग नहीं होते।

गुरुकुल आई.सी.एस.
(An institute for civil services)
2nd माला, सुंदरम काम्पलेक्स, भंवरकुआँ मेन रोड, इन्दौर
9827462437, 0731-2465085

प्रश्न क्रमांक	मुख्य परीक्षा म.प्र. लोक सेवा आयोग	नीचे हाशिएं में नहीं लिखें

प्रारूप

(क)

विभाग
(कार्यालय)
स्थान

क्रमांक ----   अनुस्मारक   दिनांक ----

प्रति

पदनाम
कार्यालय
स्थान

संदर्भ- पूर्व पत्र क्रमांक ----

विषय-

पत्र क्रमांक ....

भवदीय

हस्ताक्षर
पद
कार्यालय

प्रश्न क्रमांक	

मुख्य परीक्षा

म.प्र. लोक सेवा आयोग

उदाहरण

पुलिस अधीक्षक
सतना

क्रमांक 261-b/2008-1-2 सतना 2008-1-2

अनुस्मारक

प्रति,

उपपुलिस अधीक्षक
थाना - सिविल लाइन
सतना, म.प्र.

संदर्भ- पूर्व पत्र क्रमांक 260-b/2007-11-8 के कार्यवाही के संबंध में।

महोदय,

पूर्व पत्र क्रमांक 260-b/2007-11-8 में वर्णित कार्यवाही का त्वरित निराकरण किया जावे।

भवदीय

पुलिस अधीक्षक
सतना
म.प्र.